

MBh. 6, 2577. भयार्दिता दुहुविरे समस्ततः R. 6, 37, 102. Bhāg. P. 9, 4, 49. यथा कृकर्णधारा नौ रघो वासारविषया । इवेत्येष्टे तद्वत्स्यादते सेनापतिं बलम् ॥ MBh. 7, 142. partic. हुतं eilend, rasch, geschwind AK. 1, 1, 1, 60. Trik. 3, 3, 160. H. 1470. an. 2, 172. Med. 1. 23. हुतास्ते हुतवाक्याः R. Gorr. 1, 70, 1. हुताभिः — गङ्गामिभिः MBh. 13, 1839. °यान सु०. 1, 98, 10. °विक्रमा Bhāg. P. 4, 4, 4. हुततरंगति Megh. 19. तिष्ठो वृत्तीरूपदि-शक्ति वाचो विलम्बिता मध्यमां च हुतां च RV. Prāt. 13, 18. Cikṣā 22 in Ind. St. 4, 269. Pat. zu P. 1, 4, 109 (Calc. Ausg.). शरणाः स्राध्या डुवृ-हुते eine schwer verständliche und rasch gesprochene Rede Git. 1, 4. da- von gelaufen, davonlaufend, fliehend Med. °वराकुकुल Ragh. 9, 59. R. 1, 20. मृगौ मृगपुहुता Bhāg. P. 4, 17, 14. भय° AK. 3, 1, 42. H. 368. हुतम् adv. eiligst, schnell, ohne Zögern, sogleich M. 9, 272. MBh. 3, 2936. 2938. 4, 810. R. 2, 78, 10. 3, 76, 21. Bhā. Tr. 3, 36. Megh. 23. Pañkāt. V. 82. Hit. 33, 13. Kathās. 3, 92. Dhūntas. 68, 12. Bhāg. P. 3, 19, 35. हुततरम् rascher, recht rasch, so schnell als möglich R. 1, 44, 25. Pañkāt. 23, 15. 36, 14. 213, 19. Amar. 43. — 2) auf Jmd (acc.) losrennen, einen raschen Angriff auf Jmd machen: ततः किरोटो सकृत् पाञ्चालान्समरे ऽद्वत् MBh. 1, 5478. धनेजयमडुहुवत् 5483. R. 6, 18, 48. Bhāṭṭ. 9, 59. वाकिनां इवते मम MBh. 6, 5074. — 3) in Fluss gerathen, schmelzen: घृतकुम्भसमा नारी त-प्ताङ्गारसमः पुमान् । संक्षेपाद्भवते कुम्भः Vet. 24, 7. इवमाणं कालायसम् Bhāg. P. 5, 26, 29. भक्त्या इवद्वय 3, 28, 34. तासां दृक्संगमं प्राप्य यत्र इ-वति कौतुकम् dass man nicht schmilzt ist ein Wunder Pañkāt. IV, 33. हुत in Fluss gerathen, geschmolzen, flüssig AK. 3, 2, 39. 49. Trik. H. 1487. H. an. Med. संतापहुतभूरिर्सापिष घटे Rāga - Tar. 2, 78. शातकुम्भ Ciq. 9, 9. Bhāṭṭ. 2, 12. प्रवर्धमानानुरागभरहुतद्वय Bhāg. P. 5, 7, 11. अथ° (घट्ट°) Megh. 100.

— caus. 1) द्रावयति P. 1, 3, 86. Vop. 22, 2. im Epos auch med. a) zum Laufen bringen, fließen lassen; davonlaufen machen, vertreiben, ver- scheuchen, in die Flucht jagen: अर्धया द्रावया वं सेमामन्द्रः पिपासति RV. 8, 4, 11. द्रावयिष्यामि शात्रवान् MBh. 4, 1082. Bhāṭṭ. 8, 58. (रातसाः) शस्त्रवर्षाणि वर्षतो द्रावयिता वनैकसः MBh. 3, 16356. यत्र रावणो द्राव-यन्प्रजाः R. 6, 13, 5. द्रावयते चम्पू MBh. 7, 9159. द्रावयाणो वन्नथिनीम् 6, 5199. यथा हि पद्ममध्यस्यो द्रावयते पद्मन्वक्त्रः 4357. द्राव्यमाणान्महाराथा-न् 2542. 4710. कुन्पस्य यथा राव्यं दुर्भितव्याधितस्कैः । द्राव्यते तददा-पन्ना पाण्डवैस्त्वव वाकिनी ॥ 7, 8515. द्रावित Bhāg. P. 3, 18, 11. — b) in Fluss bringen, schmelzen P. 1, 3, 86. Sch. इविर्न द्रावयति दाहं धनं RV. 6, 4, 3. — 2) द्रावयते laufen, fließen: ऊर्मिर्न निमैर्द्रवयत् वक्ताः RV. 10, 148, 5.

— desid. डुवृवयिषति und दि° P. 7, 4, 81. Vop. 19, 15.

— अति vorüberreiten bei; hinfahren über: अति इव सारमेयौ श्वानौ RV. 10, 14, 10. AV. 10, 9, 8, 9. उत्तरं गिरिमतिडुवृवयत् Cat. Br. 1, 8, 1, 5. partic. अतिहुत VS. 19, 3. fehlerhaft für अभिहुत MBh. 12, 276.

— अर्थि bespringen, belegen: वृषा योषामधिद्रवति Cat. Br. 1, 7, 2, 12. 11. 2, 4, 23. 3, 8, 5, 7. — caus. bespringen lassen Cat. Br. 1, 7, 2, 12. 9, 2, 24.

— अनु 1) hinter Jmd (acc.) herlaufen, verfolgen, begleiten: अन्वद्रवत् तं पश्चाद्वाजानः MBh. 8, 5078. (तम्) अन्वद्रवदभिकुद्धे रावणं गृधराडिव Bhāg. P. 4, 19, 16. अनुहुत a) mit pass. Bed.: राजमूर्तिरनुहुतः Ragh. 3, 38. 12, 67. 16, 25. Kathās. 19, 108. 20, 167. — b) mit act. Bed.: तं निःसरत्

सलिलादनुहुतो किरण्यकेशो द्विदं यथा कषः Bhāg. P. 3, 18, 7. सर्वे ते ऽनिमिषैरित्तमनुहुतचेतसः । वीक्षतः 1, 10, 13. — 2) durchlaufen so v. a. rasch auftragen: अर्धचम्पू Cat. Br. 7, 3, 2, 25. यजुः 13, 2, 2, 1. 4, 2, 3, 5, 2, 4. दशकितारमपश्यत् मनसानुहुत्यं दर्भस्तम्बे ऽनुकोत् TBh. 2, 2, 1, 1, 2, 1. TS. 5, 1, 4, 2. — 3) wiederholen: तामिः स बलवाद्वादः क्रोशतीभिर्नुहुतः । येन स्फीतीकृते भूयस्तद्दृष्टं समनादयत् ॥ R. 2, 63, 26.

— समनु hinter Jmd oder Etwas herlaufen MBh. 10, 657. वर्षो समनुद्र-वते मनः 14, 636.

— अथ weglassen Ait. Br. 2, 11. Cat. Br. 4, 2, 1, 3. Bhāg. P. 4, 17, 14.

— अभि 1) herbeilaufen, herbeieilen, zueilen auf (acc.), hinein zu. losgehen (in feindlicher Absicht) auf: सिन्ध्या यद्वाज्ञौ श्रम्यद्रवत्वम् RV. 10, 73, 2. Nir. 8, 1. Cat. Br. 14, 4, 1, 3. Shadv. Br. 4, 5. Kenop. 17. MBh. 1, 6000. 6282. 2, 1092. 3, 675. 2946. 4, 1114. 5, 7188. 8, 3014. 13, 1919. Arā. 7, 1. Draup. 3, 20. R. 1, 28, 23. रसातलमभिद्रवन् 41, 12. 2, 34, 17. 40. 20. 37, 9. 6, 79, 41. एते हि विद्युद्गुणावद्वक्ता गन्ता इवान्योऽन्यमभिद्रवतः । शक्राज्ञया वारिधाराः Mṛākh. 84, 13. Bhāg. P. 3, 20, 20. 6, 9, 18. 11, 9. 8. 9, 2. अभिद्रवति मामीश शरः 1, 8, 10. 9, 4, 49. med. MBh. 1, 5939. 3, 564. 13, 7284. 14, 2202. Hariv. 3099. अभिद्रुतमिवारण्ये सिन्देन गजयूयम् R. Gorr. 2, 7, 30. R. Schl. 2, 96, 45. — 2) überlaufen, kommen über, heim- suchen: श्यावा लोहितिका नीला पीतिका वापि मानवम् । अभिद्रवति यं कृपाः (unter कृपा ist die Bed. 2, c zu streichen und dieses Beispiel zu d zu stellen) स परासुरसंशयम् ॥ Suṣr. 1, 114, 15. व्यसनैरभिद्रुतं कुलम् Śālv. 6, 43. जन्ममृत्युत्राव्याधिदेनाभिरतिद्रुतम् (sic) । देहम् MBh. 12, 276.

— समभि 1) zusammenlaufen nach, herbeilaufen, hinzueilen, zueilen auf (acc.), hinein zu, losgehen auf (in feindlicher Absicht) Nir. 2, 10. MBh. 1, 6287. 3, 10990. 4, 1071. भीष्मं समभिद्रुत्य जलोघ इव पर्वतम् 6, 1953. 3561. Hariv. 336. 8870. R. 3, 26, 16. 33, 34. 4, 13, 23. 5, 25, 2. सम-भिद्रुत mit pass. Bed. 3, 16354. 9, 1030. R. 5, 3, 15. mit act. Bed.: यथा-नलं प्रज्वलितं पतंगाः समभिद्रुताः MBh. 6, 2043. समभिद्रुतम् adv. = हुत-म् eiligst: इमं कृत्वा गृहोत्वा च यास्ये ऽहं समभिद्रुतम् 12, 6402. — 2) be- lagern, belästigen: (पन्थानम्) अयोमुखैश्च काकाद्यैर्गृध्रैश्च समभिद्रुतम् MBh. 18, 46.

— व्यव weglassen: यत्रापः प्रतीचीर्गार्कपत्याद्यवद्रव्युः Kāṭh. 23, 3.

— समव zusammen weglassen Cat. Br. 13, 4, 4, 6.

— आ herbeilaufen, herbeieilen, hinein zu: पुनः प्रतियोन्याद्रवति Cat. Br. 14, 7, 1, 17. 40. VS. 11, 2. मा कृत्विष्यत् आद्रवति Ait. Br. 3, 20. MBh. 3, 248. 6, 2578. 5097. 5162. Nalod. 3, 15. चैत्यप्राकारमाद्रवन् MBh. 2, 814.

— अन्वा hinter Jmd (acc.) herlaufen, verfolgen: अन्वाद्वत् — गुरु-पुत्रं रथेन Bhāg. P. 1, 7, 17.

— अन्या zulaufen auf, losgehen auf: तमिन्ने ऽभ्याडुवृव कृत्विष्यन् Cat. Br. 1, 6, 2, 16.

— उदा hinauf —, hinauslaufen: समिधमुपसंगृह्य प्राडुदाद्रवत्यथाकृ-वनीये नृकोति Cat. Br. 12, 4, 4, 6. 2, 3, 1, 17. TBh. 2, 1, 9, 3. — Vgl. उद्.

— उपा herbeieilen: आ मा पृषन्पुं द्रव्यं शंसिषुं नु तै RV. 6, 48, 16.

— पर्या hinundherlaufen Bhāg. P. 4, 3, 13.

— प्रा davonlaufen, fliehen: भीताः प्राद्रवन्ति (v. l. प्र°) MBh. 1, 2843. einer Gefahr glücklich entrinnen und gelangen zu: न हि यागं प्रपश्या-